3

अच्छे पड़ोसी के गुण

हमने जीवन में कई पड़ोस बदले हैं। पर इन सब परिस्थितियों के बीच एक शाश्वत सत्य कभी नहीं बदल पाया। हमारा पड़ोसी के प्रति दृष्टिकोण आज भी स्नेहमय, उदार और सहायतापूर्ण रहा है। हमें यकीन है कि हमारे पड़ोसी भी हमारे प्रति ऐसे ही नेक इरादे रखते हैं। हमारे एक पड़ोसी की पत्नी हमेशा बीमार रहती थी। हम उनके पति की शक्ल देखते और एक ही सवाल दागते, ''आज भाभीजी का क्या हाल है?'' यह वैसे ही होता जैसे किसी काने से कोई रोज़ **दरियाफ़्त** करे कि ''भैया, उस आँख में रोशनी आई क्या?'' पड़ोसी कुछ समय बाद हमें देखते ही झुँझलाते और खुद ही आश्वस्त करते, ''आपकी भाभी की सेहत सुधर रही है।''

हम घर जाकर अपनी श्रीमतीजी से इस महान नारी के जीवन की तारीफ़ करते नहीं **अघाते**, ''एक साल से बिस्तर पकड़े है। अच्छे-अच्छे टें बोल जाते हैं इतने दिनों में। पर यह तो लगता है कि भगवान के यहाँ से **अमरौती** खाकर आई है।''

ऐसा ही स्नेहमय व्यवहार हमारे पड़ोसी का भी था। हमें साधारण सरदी-ज़ुकाम भी होता तो वे **चेताते**, ''अकसर आपका गला खराब रहता है। किसी अच्छे डॉक्टर को दिखाइए। हमने कहीं पढ़ा था कि बार-बार की खाँसी कैंसर का प्रारंभिक लक्षण भी होती है।'' यह हमारा सौभाग्य है कि हमने और हमारे पड़ोसी ने एक-दूसरे के परिवारों की सेहत के लिए ऐसा ही सद्भाव का रवैया अपनाया। शायद यह इन्हीं पारंपरिक शुभकामनाओं का प्रभाव था कि हमारी 'भाभी' की **प्राण-चिरैया** चारपाई में अटकी रही और हमारी खाँसी आती-जाती तो रही, पर 'कैंसर' न बन पाई। एक-दूसरे के बारे में अच्छे विचार हमेशा सुखद परिणाम देते हैं।

जहाँ तक उदारता का प्रश्न है, अपने पड़ोसी के लिए हमारा दिल दरिया रहता है।

शब्दार्थ–**दरियाफ़्त**–पता लगाना, **अघाते**–थकते, **अमरौती**–अमर होने की कोई जड़ी-बूटी आदि, **चेताते**–सावधान करते/चेतावनी देते, **प्राण-चिरैया**–चिड़िया रूपी प्राण

जिन पुराने जूतों, प्लास्टिक के थैलों और टूटी शीशियों को हमने सालों-साल सँजोया, उन्हें पड़ोसी को दान करने में हमें ज़रा भी संकोच नहीं होता है। ऐसा नहीं है कि दिमाग टोका-टाकी नहीं करता है। अंदर से अपनी बेशकीमती जायदाद ख्वाहमख्वाह पड़ोसी पर लुटाने के विरोध में स्वर उभरता है। हम उसे समझाते हैं कि इतने सारे कबाड़ी इस माल को 'रिजेक्ट' कर चुके हैं, इसे कहीं तो ठिकाने लगाना है। फिर जी कड़ा कर उसे किस्त-दर-किस्त पड़ोसी की झाड़ी पार फेंक देते हैं। हमें ताज्जुब होता है कि वह हमसे उदारता के इस **कृत्य** के विरुद्ध बहस करता है। कहता है कि जाने कौन जंगली उसके घर में सड़ा-गला कूड़ा फेंक जाता है। यह हमारी सामाजिक उपलब्धि है कि हम एक-दूसरे का नाम लेकर बुरा-भला नहीं कहते हैं। बुरा-भला कहना होता है तो इशारे से कहते हैं। इसीलिए कहावत है कि समझदार को इशारा काफ़ी है। अपन स्वभाव से अहिंसक हैं। कौन झगड़े-झंझट में पड़े। हम जानबूझकर मूर्खता का अभिनय करते हैं और पड़ोसी के सामने कूड़ा फेंकने वाले को डटकर कोसते हैं। अगले दिन हम अपने दरवाज़े को कचरे के ढेर से सुशोभित पाते हैं। हम भी पड़ोसी से उस तीसरे गिरे हुए इनसान को हर प्रकार का संक्रामक रोग लगने की बददुआ देते हैं, ''अपनी तो एक ही तमन्ना है। यह कूड़े का संवाहक जल्दी-से-जल्दी कूड़े के ढेर में मिले।'' पड़ोसी गंभीरता से मुंडी हिलाकर हमसे हमदर्दी जताते हैं। कूड़े का यह आदान-प्रदान बिना रोक-टोक के चलता रहता है।

महिलाएँ भी पड़ोसी धर्म निभाने में कोई कोर-कसर नहीं छोड़ती हैं। उनका सिलसिला चीनी और चाय की पत्ती से शुरू होता है और एक-दूसरे की साड़ी-शॉल पर आकर टूट जाता है। हमें एक दिन घर पर पड़ोसी की बेटी को एक बंडल लाते देखकर आश्चर्य हुआ। अपने और पड़ोसी के सड़क के संबंध हैं। उनमें घर में घुसना शामिल नहीं है। उसने चहकते हुए सूचित किया, ''आंटी, आंटी! मम्मी ने आपकी साड़ियाँ प्रेस करवाकर भेजी हैं। उन्होंने अपना **तूश** का शॉल वापस मँगाया है।'' अपन चकराए। हम पुरुष कचरा ढोने-फेंकने में लगे रहे और यहाँ साड़ी-गजरा आने-जाने लगा।

शॉल तो समझ में आता है, पर यह 'तूश' क्या बला है? हम अपनी जिज्ञासा प्रकट कर पाते कि पत्नी ने लड़की को शॉल खुद पहुँचाने के वादे के साथ विदा किया और **अंतर्धान** हो गईं। आईं तो उनके हाथ में एक मटमैला-सा गरम कपड़े का टुकड़ा था। उनके चेहरे पर **संत्रास** का भाव था और स्वर में परेशानी। पता लगा कि पड़ोसन से उधार लिए शॉल पर चटनी के कुछ दाग लग गए थे। हमें उसे ड्राई-क्लीन करवाने का ज़िम्मा दिया गया। चूँकि

शब्दार्थ–**कृत्य**–काम, **तूश**-पहाड़ी बकरे का ऊन, **अंतर्धान**–गायब हो जाना, **संत्रास**–अत्यंत भय

वह कमबख़्त 'तूश' का था, उसकी सफ़ाई में डेढ़ सौ की चोट लगी। अपनी आज भी 'तूश' के बारे में सिर्फ़ इतनी जानकारी है कि वह गरम कपड़े का ऐसा टुकड़ा है जिसकी धुलाई तक में जेब कटती है, खरीदने में कौन जाने नाक-कान की नौबत आती हो। बहरहाल पड़ोसन को तूश पर दाग लगने का हादसा ज्ञात हो गया और उन्होंने तूश दागी करने के लिए हमारी पत्नी को दोषी ठहराया। उनके अनुसार यह जान-बूझकर किया गया अपराध था, जिसकी जड़ में जलन और स्पर्धा की भावना थी। उन्होंने आरोप लगाया कि उनकी शुद्ध महँगी चाय की पत्ती के बदले हमारे घर में चाय की पत्ती के नाम पर उसका चूरा उन्हें माँगने पर मिलता था। एक बार उन्होंने अव्वल दरजे के प्याज़ उधार दिए और सड़े पिलपिले वापस पाए। ऐसे तूश-प्रकरण के बाद हमारे घरों में शीत-युद्ध चल रहा है और महिलाओं में बातचीत बंद है।

पत्नी के रुख़ से हमारे पड़ोसी-प्रेम में कोई तब्दीली नहीं आई है। हम वक्त-ज़रूरत उनकी सहायता में तत्पर रहते हैं। हमें पता है कि 'केबल' टी.वी. नई पीढ़ी के लिए कितना नुकसानदेह है। इसका **दुष्प्रभाव** बच्चों की पढ़ाई पर तो पड़ता-ही-पड़ता है, उनकी नज़र भी इससे कमज़ोर होती है। लिहाज़ा हम मौका मिलते ही उनकी 'केबल' का तार काट देते हैं। उन्हें भी हमारी नई पीढ़ी का ख़्याल है। हमारा 'केबल' का तार भी अकसर धराशायी पाया जाता है। हम उनके मेहमानों का खर्च भी बचाते हैं। कई बार उनका पता पूछने वालों को हमने दूसरे मोहल्लों में दिशा-भ्रमित किया है। पर इस विषय में हमारे प्रति उनका सहयोग कुछ अनुचित किस्म का है। वे कई बार अजनबियों तक को हमारे घर भेज देते हैं। ऐसे सहयोग-सौहार्द के बिना पास-पड़ोस का जीवन दूभर होने का खतरा है। जब से सरकार ने भ्रष्टाचार के विरुद्ध पचास वर्ष में सौवीं बार कमर कसी है, हम पड़ोसी के घर हर दीवाली-नए साल के मौके पर भेंट-मिठाई लाने वाले के सी.बी.आई. एजेंट होने की चेतावनी देना नहीं भूलते हैं। यह अपना दुर्भाग्य है कि हमें उस प्रकार भ्रष्ट करने तक भी कोई नहीं आता है।

हमें लगने लगा है कि व्यक्ति और देश के पड़ोसियों के व्यवहार में ख़ास अंतर नहीं है। आखिर देश की इकाई भी व्यक्तियों के समूह से ही बनती है। जैसे हमारे पड़ोसी हमारे प्रति प्रेम और सद्भावना रखते हैं वैसे ही हमारे पड़ोसी देश भी। शांति, अहिंसा और आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप न करने का उसूल हर पड़ोसी देश संसार के सामने सार्वजनिक तौर पर अपनाता है। यह **दीगर** है कि कभी-कभार सीमा-क्षेत्र में आतंकवादी गोलीबारी कर लें। उसके जासूस शहरों में बमबारी की योजना बनाएँ। थोड़ी-बहुत आतिशबाज़ी तो होती रहनी चाहिए। यों भी, दूसरा कौन-सी दाल खाता है, जानने की इच्छा एक स्वाभाविक जिज्ञासा है। अपनी तो एक ही आकांक्षा है। हमें अपने पड़ोसी से इतना लगाव है, वह भी हमसे अपने व्यवहार में कुछ सुधार लाए। ताली एक हाथ से तो बजती नहीं है। दोनों हिल-मिलकर अमन-चैन से रहें।

–गोपाल चतुर्वेदी

शब्दार्थ–दुष्प्रभाव–बुरा असर, **दीगर**–अन्य (बात)

अभ्यास

पाठ में से

1. लेखक पड़ोसी के प्रति अपनी उदारता का परिचय किस प्रकार देते थे?
2. पड़ोसी की केबल का तार काटने को लेकर लेखक क्या तर्क देते हैं?
3. लेखक ने व्यक्ति और देश के पड़ोसियों की तुलना क्यों की है?
4. पाठ के आधार पर बताइए कि अकसर पड़ोसियों में किन बातों को लेकर बहस होती थी?
5. **पाठ के आधार पर नीचे कुछ कथन दिए गए हैं। सही कथनों के आगे सही (✔) का निशान और गलत कथनों के आगे गलत (✘) का निशान लगाइए–**

   ☐ तूश के शॉल पर चटनी का दाग लगने से लेखक की पत्नी बहुत परेशान थी।

   ☐ लेखक का व्यवहार अपने पड़ोसियों के प्रति उदार था।

   ☐ लेखक को पड़ोसी की पत्नी के स्वास्थ्य की चिंता थी।

   ☐ पड़ोसियों के बीच चाय की पत्ती, प्याज़, साड़ी आदि का लेन-देन होता था।

   ☐ लेखक कूड़ा फेंकने की अपनी गलती को पड़ोसी के सामने मान लेते थे।

बातचीत के लिए

1. तूश-प्रकरण को अपने शब्दों में बताइए।
2. महिलाओं के बीच पड़ोसी धर्म निभाने का सिलसिला समाप्त क्यों हो जाता है?
3. कोई ऐसी घटना बताइए जब आपके पड़ोसी ने अपना पड़ोसी धर्म निभाते हुए आपकी सहायता की हो।
4. क्या वास्तव में लेखक और उनके पड़ोसी का व्यवहार एक-दूसरे के प्रति उदार था? अपने विचार बताइए।

अनुमान और कल्पना

1. यदि लेखक और उनके पड़ोसी का व्यवहार एक-दूसरे के प्रति अच्छा होता, तो उनके जीवन में क्या परिवर्तन आता?
2. यदि लेखक और उनके पड़ोसी वास्तव में 'अच्छे पड़ोसी' होते, तो वे शीत युद्ध की समस्या से कैसे निपटते?

भाषा की बात

1. **नीचे दिए गए शब्दों के विलोम शब्द लिखिए–**

   (क) शाश्वत ..... (ख) दुखद ..... (ग) दुर्भाग्य .....

2. **नीचे दिए गए वाक्यों का भाव समझाइए–**

   (क) एक साल से बिस्तर पकड़े हैं।

   .....

   (ख) हमारी भाभी की प्राण-चिरैया चारपाई में अटकी रही।

   .....

   (ग) उसकी सफ़ाई में डेढ़-सौ की चोट लगी।

   .....

जीवन मूल्य

1. पड़ोसियों के बीच दैनिक प्रयोग की वस्तुओं का आदान-प्रदान होता रहता है। हमें इस आदान-प्रदान में किन बातों का ध्यान रखना चाहिए?
2. निम्नलिखित स्थितियों में आप पड़ोसी के साथ कैसा व्यवहार करेंगे–

   (क) जब उनके परिवार में कोई अस्वस्थ हो।

   (ख) जब उनकी अनुपस्थिति में उनके घर कोई अतिथि आ जाए।

कुछ करने के लिए

अपने किन्हीं तीन पड़ोसियों के विषय में जानकारी देते हुए दिए गए बिंदुओं के आधार पर कॉपी में तालिका बनाइए–

पड़ोसी का नाम	पड़ोसी के घर के सदस्य	पड़ोसी की कोई दो ख़ास आदतें, जो आपको पसंद हों	पड़ोसी की कोई दो ख़ास आदतें, जो आपको पसंद न हों
.....	.....	.....	.....
.....	.....	.....	.....

4

दोपहरी

गरमी की दोपहरी में
तपे हुए नभ के नीचे
काली सड़कें तारकोल की
अंगारे-सी जली पड़ी थीं
छाँह जली थी पेड़ों की भी
पत्ते झुलस गए थे
नंगे-नंगे **दीर्घकाय**, कंकालों-से वृक्ष खड़े थे
हों अकाल के ज्यों अवतार।
एक अकेला ताँगा था दूरी पर
कोचवान की काली-सी चाबुक के बल पर वो बढ़ता था
घूम-घूम जो बलखाती थी सर्प **सरीखी**
बेदर्दी से पड़ती थी दुबले घोड़े की गरम पीठ पर
भाग रहा वह तारकोल की जली
अँगीठी के ऊपर से।
कभी एक ग्रामीण धरे कंधे पर लाठी
सुख-दुख की मोटी-सी गठरी
लिए पीठ पर भारी
जूते फटे हुए
जिनमें से थी झाँक रही गाँवों की आत्मा

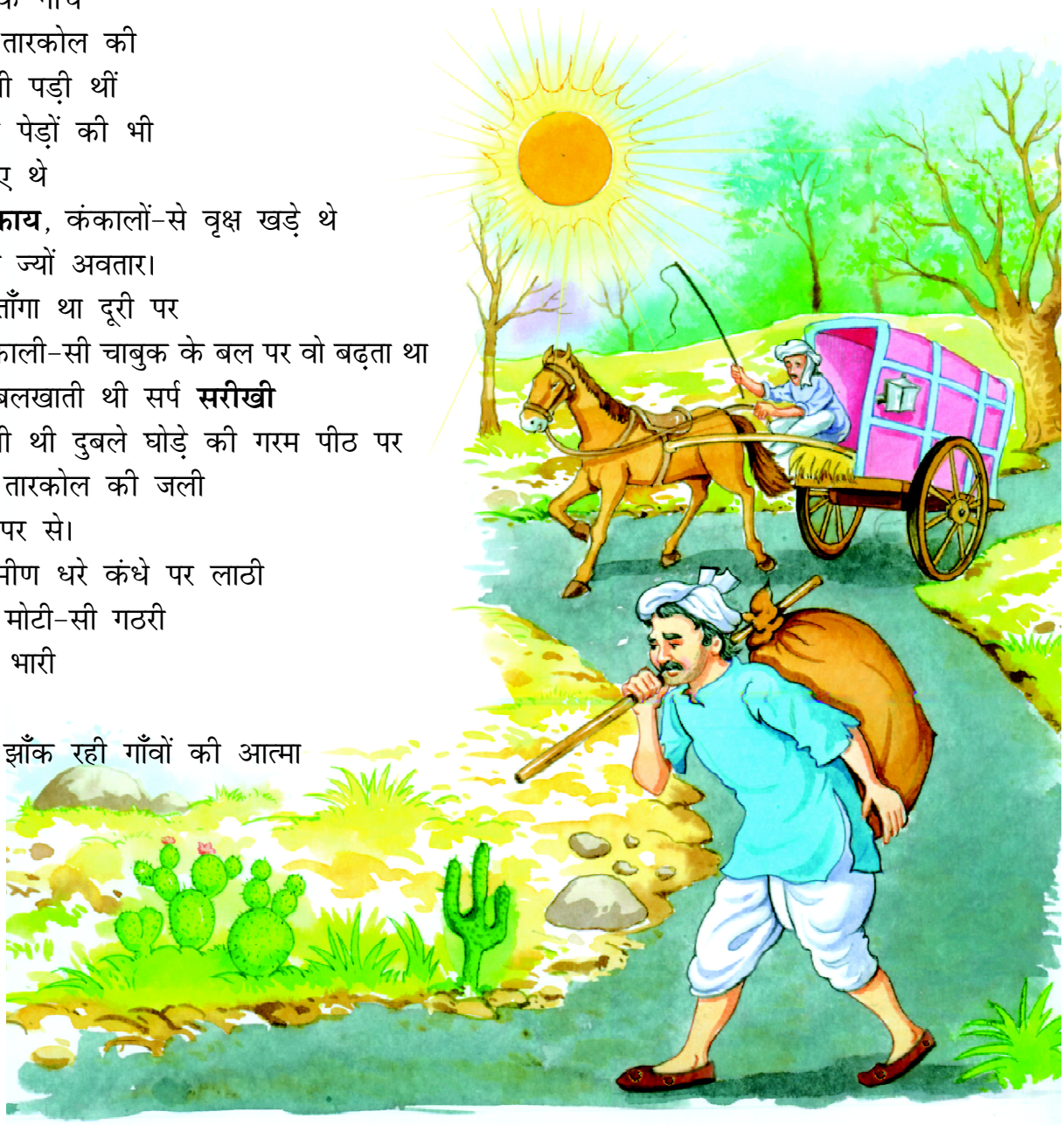

शब्दार्थ–**दीर्घकाय**–लंबा-तगड़ा, **सरीखी**–समान

ज़िंदा रहने के कठिन जतन में
पाँव बढ़ाए आगे जाता।
घर की खपरैलों के नीचे
चिड़ियाँ भी दो-चार चोंच खोल
उड़ती-छिपती थीं
खुले हुए आँगन में फैली
कड़ी धूप से।
बड़े घरों के **श्वान** पालतू
बाथरूम में पानी की हल्की ठंडक में
नैन मूँदकर लेट गए थे।
कोई बाहर नहीं निकलता
साँझ समय तक
थप्पड़ खाने, गरम हवा के
संध्या की भी चहल-पहल ओढ़े थी
गहरे सूने रंग की चादर
गरमी के मौसम में।

–शकुंत माथुर

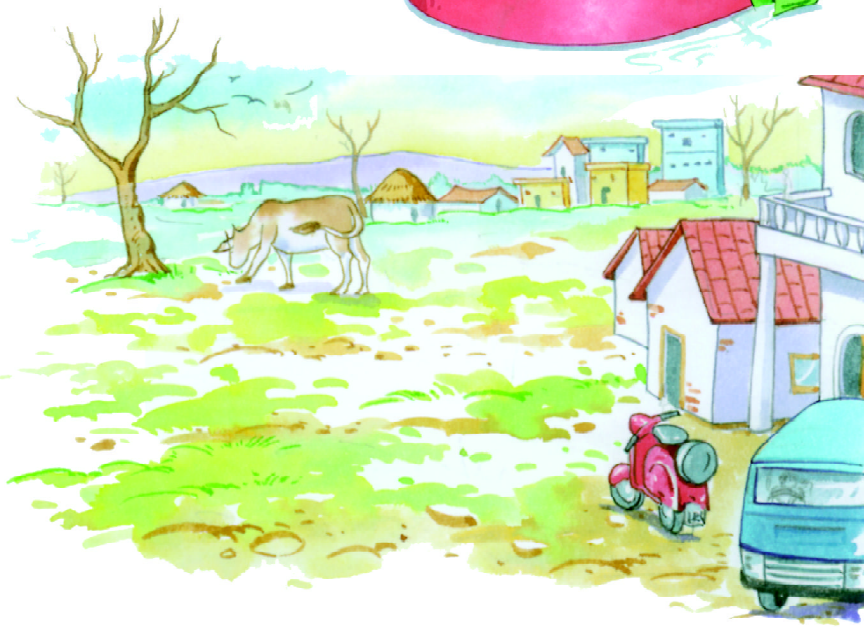

शब्दार्थ–**श्वान**–कुत्ता, **नैन**–आँख

अभ्यास

कविता में से

1. गरमी का वृक्षों पर क्या प्रभाव पड़ा?
2. 'जूते फटे हुए, जिनमें से झाँक रही गाँवों की आत्मा'–कविता की इस पंक्ति का भाव स्पष्ट कीजिए।
3. गरमी में बड़े घर के कुत्तों को प्राप्त सुविधाओं और आम आदमी की मजबूरी की तुलना कीजिए।
4. दोपहर बीत जाने के बाद संध्या के समय भी कोई बाहर क्यों नहीं निकलता?
5. **उचित उत्तर पर सही (✔) का निशान लगाइए–**

(क) वृक्ष कैसे लग रहे थे?

- ☐ कंकालों–से
- ☐ अवतार–से
- ☐ सर्प–से
- ☐ चाबुक–से

(ख) घोड़ा आगे कैसे बढ़ता था?

- ☐ अँगीठी के बल पर
- ☐ अँगारों के बल पर
- ☐ चाबुक के बल पर
- ☐ सर्प के बल पर

(ग) संध्या की चहल–पहल ने क्या ओढ़ा हुआ था?

- ☐ अँगारों की चादर
- ☐ गहरे रंग की चादर
- ☐ सूने रंग की चादर
- ☐ गहरे–सूने रंग की चादर

6. कविता के दिए गए अंश को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

कभी एक ग्रामीण धरे कंधे पर लाठी
सुख-दुख की मोटी-सी गठरी
लिए पीठ पर भारी
जूते फटे हुए
जिनमें से झाँक रही गाँवों की आत्मा
ज़िंदा रहने के कठिन जतन में
पाँव बढ़ाए आगे जाता।
घर की खपरैलों के नीचे
चिड़ियाँ भी दो-चार चोंच खोल
उड़ती-छिपती थीं
खुले हुए आँगन में फैली
कड़ी धूप से।

(क) ग्रामीण ने कंधे पर क्या उठाया हुआ था?

.....

.....

(ख) ग्रामीण पाँव आगे क्यों बढ़ाता जा रहा था?

.....

.....

(ग) चिड़ियाँ किस कारण से और कहाँ उड़ती-छिपती थीं?

.....

.....

बातचीत के लिए

1. घोड़ा दोपहरी में भी आगे बढ़ने के लिए क्यों मजबूर था?
2. गरमी की छुट्टियों में दोपहर के समय आप क्या करते हैं? कक्षा में चर्चा कीजिए।
3. क्या मानव-समाज के समान पशु-जगत के जीव भी अमीर-गरीब की श्रेणी में आते हैं? अपने उत्तर के लिए कारण भी दीजिए।
4. कविता 'दोपहरी' के किस अंश ने आपको प्रभावित किया और क्यों?

भाषा की बात

1. **कविता में आए निम्नलिखित शब्दों के दो-दो पर्यायवाची लिखिए–**

(क) नभ ....

(ख) सर्प ....

(ग) घर ....

(घ) नैन ....

2. **कविता के आधार पर दिए गए विशेष्य शब्दों के लिए विशेषण लिखिए–**

	विशेषण	**विशेष्य**		**विशेषण**	**विशेष्य**
(क)	.....	सड़कें	(घ)	.....	ग्रामीण
(ख)	.....	घोड़े	(ङ)	.....	गठरी
(ग)	.....	पीठ	(च)	.....	जूते

जीवन मूल्य

1. समाज में अमीर-गरीब के भेदभाव पर चर्चा कीजिए और बताइए कि निर्धन-वर्ग के विकास के लिए क्या-क्या किया जा रहा है?
2. मनुष्य को जीवन में सुख के साथ कठिन परिस्थितियों का सामना भी करना पड़ता है। ऐसी कठिन परिस्थितियों में मनुष्य को क्या करना चाहिए?

कुछ करने के लिए

1. ऋतुओं पर अनेक कविताएँ लिखी गई हैं। सरदी, वर्षा और बसंत ऋतु पर एक-एक कविता कॉपी में लिखिए व कक्षा में सुनाइए।
2. सरदी, गरमी और वर्षा ऋतु में दोपहर का समय कैसा होता है? कक्षा में चर्चा कीजिए।

(केवल पढ़ने के लिए)

5

आकाश को सात सीढ़ियाँ

सवेरे-सवेरे एक दिन अख़बार पढ़ते समय मैंने एक विज्ञापन देखा। लिखा था–

'जो रॉकेट पायलट बनना चाहते हैं, वे निम्नलिखित पते पर आवेदन करें:'

सामंति चन्द्रशेखर

महाकाश गवेषणा केंद्र

बंबई-1

मैं उस समय कॉलेज में पढ़ता था। करीब दो साल हुए फ़्लाइंग क्लब में प्रवेश कर विमान-चालक बन चुका था। मन तैयार नहीं था पर जी चाहता विमान को महाकाश की ओर उड़ा ले जाऊँ। पर क्या विमान इतना ऊँचा उड़ सकता है? उसके लिए चाहिए रॉकेट। मैंने फ़ौरन आवेदन कर दिया।

मैं 'महाकाश गवेषणा केंद्र' से बुलावा पाकर बंबई (मुंबई) पहुँचा। देखा भारत की कई जगहों से अनेक **प्रार्थी** वहाँ **एकत्रित** हैं। उनमें से कई पहलवान भी हैं। मुझे देखकर सब हँस पड़े।

मैं अधिक लंबा नहीं हूँ तो क्या हुआ? मेरा मन तो खूब लंबा है। मैं भला क्यों हार मानूँ? परेशान न होकर मैं परीक्षण की प्रतीक्षा करने लगा।

टन! घंटा बजता है। न जाने कहाँ से निकलकर अचानक एक डॉक्टर हमारे सामने खड़े हो जाते हैं। हमें परीक्षण **प्रकोष्ठ** में ले जाकर वे हाथ से न जाने क्या दिखाते हैं? हम लोगों ने देखा सात बड़े-बड़े संदूक रखे हुए हैं। उसके बाद डॉक्टर ने कहा–

''सुनिए, ये हैं स्वर्ग को जाने की सात सीढ़ियाँ। इन्हें पार करने वाला स्वर्ग जा सकता है, ऐसा हम मान लेंगे। उसके बाद उसे रॉकेट पायलट का प्रशिक्षण दिया जाएगा।''

इतना कहकर उन्होंने मेरी ओर अँगुली उठाई। मैं चल पड़ा पहले संदूक की ओर।

इस संदूक का नाम है–'घुप अँधेरी पेटी'। रॉकेट में जाने वाले को अँधेरे और एकांत में बहुत दिनों तक रहना पड़ता है। मैं अँधेरे में रह सकूँगा या नहीं, इसकी परीक्षा यहाँ होगी।

शब्दार्थ–**प्रार्थी**–उम्मीदवार, **एकत्रित**–इकट्ठा होना, **प्रकोष्ठ**–कक्ष

मुझे संदूक के अंदर धकेलकर डॉक्टर ने किवाड़ बंद कर दिया। धड़ से दरवाज़ा बंद हो गया। देखते-देखते घुप से संदूक की बत्ती बुझ गई। उसके बाद घिर आया मिचमिचाता अंधकार। चारों ओर सूनापन। **रंचमात्र** भी आवाज़ नहीं। जैसे मैं महाकाश में हूँ। महाकाश ऐसा ही अँधेरा और शून्य है।

मैं चुपचाप बैठा रहा। तनिक अँगड़ाई लेने की भी जगह नहीं थी। यह एक छोटा तंग संदूक है। ठीक रॉकेट पायलट की केबिन की तरह। उस पर अँधेरा। चारों ओर लटक रही थीं–तारों की लड़ियाँ। बाहर तारों के ज़रिए वे लोग मेरे शरीर और मन की परीक्षा कर रहे थे।

सुबह हुई। मैंने टटोलकर एक बोतल उठाई। न जाने क्या है इसमें? जैसे दिव्यचक्षु अक्षर पढ़ते हैं, वैसे ही टटोलकर मैंने बोतल को देखा। उभरे-उभरे दो अक्षर मेरे हाथ आए 'दूध', मैंने पढ़ लिया। फिर मैंने मुँह से लगाकर भूख मिटाई।

एकाएक दरवाज़ा खुला। बाहर की रोशनी मानो पहली बार आँखों में पड़ी हो। प्रकाश देखकर मैं खुशी से **पुलकित** हो उठा।

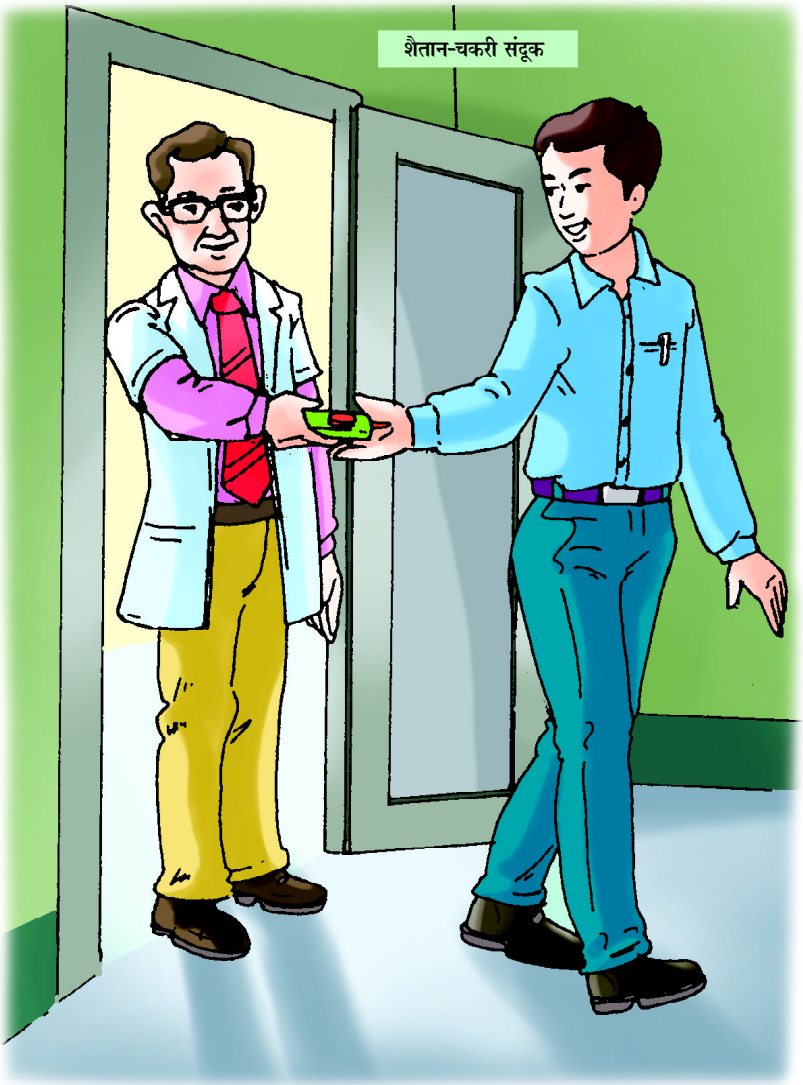

उसके बाद मैं दूसरे संदूक में गया। यह है 'शैतान-चकरी संदूक'। इसमें प्रवेश करते ही यह घूमने लगता है। ठीक वैसे ही जैसे रॉकेट पृथ्वी के चारों ओर घूमता है। यदि एक व्यक्ति को एक लंबी रस्सी से बाँधकर चकरी के समान घुमाया जाए तो उसे जैसा लगेगा, ठीक वैसा ही इस संदूक में लगता है।

मैं संदूक में घुसा। डॉक्टर ने मुझसे पैर सिकोड़कर आराम से सोने को कहा। दरवाज़ा बंद करने से पहले उन्होंने मुझे स्विच पकड़ाकर कहा–

"इस स्विच को दबाते ही बक्से के अंदर की बत्ती बुझ जाएगी। अन्यथा वह सदा जलती रहेगी। जब तक तुम्हें होश रहे स्विच दबाते रहना। बत्ती बुझते ही हम मान लेंगे कि अभी तुम्हारी और घूमने की इच्छा है। बत्ती के न बुझने पर हम सोचेंगे कि तुम डर गए हो। और तब हम चकरी बंद कर देंगे।"

धीरे-धीरे मेरा शरीर न जाने कैसा झनझनाने लगा। फिर ऐसा लगा मानो शरीर की माँसपेशियाँ

शब्दार्थ–**रंचमात्र**–थोड़ा भी, **पुलकित**–खिल उठना/प्रसन्न होना

खींच ली गई हों। मैं जानता था चकरी में बड़ी तेज़ी से घूमने पर शरीर का भार बढ़ जाता है। खून का भार भी बढ़ता है।

बड़ी देर के बाद चकरी रुक गई। डॉक्टर दिखाई पड़े। मैंने पूछा–

''जी, क्या मैं रॉकेट पायलट बन सकूँगा?'' डाक्टर ने अन्य पाँच संदूकों की ओर इशारा किया और कहा, ''अभी भी पाँच सीढ़ियाँ बची हैं।''

उसके बाद मैं जिस संदूक में गया उसका नाम है–'लाख की कोठरी।' नाम सुनकर मैं चौंक उठा। पांडवों को ऐसे ही एक घर में रखकर कौरवों ने आग लगा दी थी।

हुआ भी वही। मेरे घुसते ही कमरे को गरम कर दिया गया। रॉकेट जब महाकाश से लौटकर पृथ्वी के वायुमंडल में प्रवेश करता है, उस समय वह इसी तरह गरम हो जाता है। देखते-देखते मेरे चारों तरफ़ धुआँ उठने लगा। मैं पसीने से लथपथ होने पर भी बैठा रहा।

आधे घंटे के बाद मैं बाहर निकला। डॉक्टर ने कहा, ''अच्छा! लगता है तुम आग में भी नहीं जलोगे।'' बाद में सुना मेरी कोठरी का तापमान था 103 डिग्री फ़ारेनहाइट।

वहाँ से मैं ध्वन्यागार में गया। यहाँ मेरे कानों के पास कई तरह की तीखी आवाज़ें की गईं। कानों में रुई का फाया लगाकर मैं बैठा रहा। नहीं तो कानों के पर्दे फट गए होते। धीरे-धीरे शोर बढ़ने लगा।

यदि रॉकेट पायलट का सिर ध्वनि न झेल सके तो बड़ी मुश्किल होगी। रॉकेट जब ज़मीन से उठता है, आकाश को चीरने वाली भयंकर गर्जना करता है। इस ध्वनि से व्यक्ति पागल भी हो सकता है। जो भी हो मैं **नाद** की कोठरी से आराम से निकल आया।

इतने कष्टों के बाद भी वे मेरी परीक्षा लेते रहे। पाँचवें संदूक का नाम है–'नाचने वाला संदूक'। रॉकेट में बैठकर शून्य को उठते वक्त व्यक्ति को ऐसे अनेक धक्के खाने होते हैं। फिर व्यक्ति को उस स्थिति में दिशा ज्ञान सही रहता है या नहीं–यह जानना भी ज़रूरी है। इसलिए उन लोगों ने मुझे नाचने वाले संदूक में भर दिया। संदूक नाचने-कूदने लगा, घूमने लगा। मैं संदूक के संग नाचता रहा। पर हमेशा मेरा सिर ऊपर आकाश की ओर रहा। मतलब आकाश की ओर मुँह किए मैं रॉकेट चला रहा था।

नाचने वाले बक्से से निकलते ही उन लोगों ने मुझे छठवें संदूक में भर दिया। इस संदूक का नाम है–'भार-शून्य

शब्दार्थ–**नाद**–ध्वनि

संदूक'। इसमें कुछ ऐसी खूबी है कि संदूक में घुसते ही देह का वज़न गायब हो जाता है। शरीर रहता है पर वज़न नहीं। बड़ी तकलीफदेह स्थिति है। पृथ्वी के ऊपर बहुत ऊँचे जाने पर एक ऐसा क्षेत्र आता है जहाँ रॉकेट पायलट की देह से भार चला जाता है। अत: ज़िंदा रहकर भी वह समझ नहीं पाता है कि जीवित है या मृत।

सातवीं सीढ़ी है–'महाशून्य संदूक'। सबसे ज़्यादा कष्ट यहाँ होता है। पर वास्तविक रॉकेट पर चढ़ने का मज़ा तो यहीं मिलता है। रॉकेट पायलट की पोशाक और मुखौटा यहाँ मिलते हैं। पारदर्शी प्लास्टिक का मुखौटा लगाकर यहाँ बैठ जाने पर लगता है–वाह! ठीक रॉकेट ही है।

पहले उन्होंने मुझे पर्याप्त ऑक्सीज़न दी। उसके बाद मैं रॉकेट पायलट की पोशाक पहन महाशून्य संदूक के अंदर गया। मैं कंधे पर लटकती हुई ऑक्सीज़न की थैली से साँस ले रहा था।

इसी बीच मेरी सीट के पास एक गिलास में पानी रख दिया गया, निश्चय ही पीने के लिए नहीं। फिर किस लिए?

मैं प्रतीक्षा करने लगा। अचानक घूँ... करते हुए एक यंत्र चलने लगा। मैं फ़ौरन समझ गया कि मेरे शरीर को कोई चूस रहा है। मेरे आस-पास हवा सोखी जा रही थी। हवा का स्थान भरने के लिए मेरी पोशाक फूल-फूल उठती थी।

मेरी आँखों के सामने मीटर का एक काँटा धीरे-धीरे घूम रहा था। वह है ऊँचाई नापने का यंत्र। वह दिखा रहा था–

दस हज़ार फीट-पंद्रह हज़ार–बीस-तीस-चालीस-पचास और साठ हज़ार फीट।

ओह! उसके बाद सत्तर हज़ार फीट।

मैं वास्तव में ऊपर को नहीं उठ रहा था। सत्तर हज़ार फीट ऊपर पहुँचने पर जो हो सकता है; वह सब हो रहा था उस संदूक के भीतर। मेरी पोशाक न होती तो मेरी चमड़ी मेंढ़क की

तरह फूलकर फट गई होती।

परखने के लिए मैंने हाथ से ग्लव निकाल दिया।

आह! मेरी पलकें **मुँदने** लगीं। मेरी हथेली अचानक बैलून की तरह फूल उठी।

मीटर का काँटा उठा–

पचहत्तर हज़ार फीट।

तभी मैंने नीचे देखा।

गिलास का पानी खदकने लगा था। तापमान के कारण नहीं। **लघुचाप** के कारण। पचहत्तर हज़ार की ऊँचाई पर पानी पानी नहीं रहता। वह भाप बन जाता है।

डॉक्टर ने कहा, ''यदि पोशाक न होती तो खून इसी तरह भाप बनकर उड़ जाता।''

मेरी पोशाक में एक माइक्रोफ़ोन भी लगा था। उसे मुँह के पास लेकर मैं अचानक बोल उठा–

''हेलो! मैं युधिष्ठिर बन गया हूँ। नर्क दर्शन पूरा हो गया। अब मैं स्वर्ग को जाऊँगा।''

तुम सुनकर खुश होगे कि मुझे रॉकेट पायलट चुन लिया गया है। पहलवान सब कहाँ गए, मैं नहीं जानता। पर तुम्हें जानकर और भी **अचंभा** होगा कि इस सूचना से मेरे गुरुजी को ज़रा भी आश्चर्य नहीं हुआ। उन्होंने हँसते हुए केवल इतना ही कहा–

''यह कोई नई बात नहीं है। देह और मन को साध लेने पर व्यक्ति और भी **दु:साध्य** काम कर सकता है।''

–शान्तनु कुमार आचार्य

शब्दार्थ–**मुँदना**–पलकों का स्वयं बंद होना, **लघुचाप**–निम्न दबाव, **अचंभा**–हैरानी, **दु:साध्य**–जिसे साधना/प्राप्त करना कठिन हो

6 आश्रम के अतिथि और संस्मरण

हिंदुस्तानी प्रचार सभा की बैठक गाँधी जी की कुटी में होने वाली थी। गाँधी जी की कुटी में न मेज़ थी, न कुर्सी। चटाई पर छोटी-सी गादी पर बैठकर एक लकड़ी के फट्टे के सहारे दीवार से टिककर गाँधी जी पुराने ढंग की लिखने की डेस्क से काम लेते थे। मिट्टी-गोबर से लिपे फ़र्श पर चटाई पर ही और लोग आकर बैठते थे।

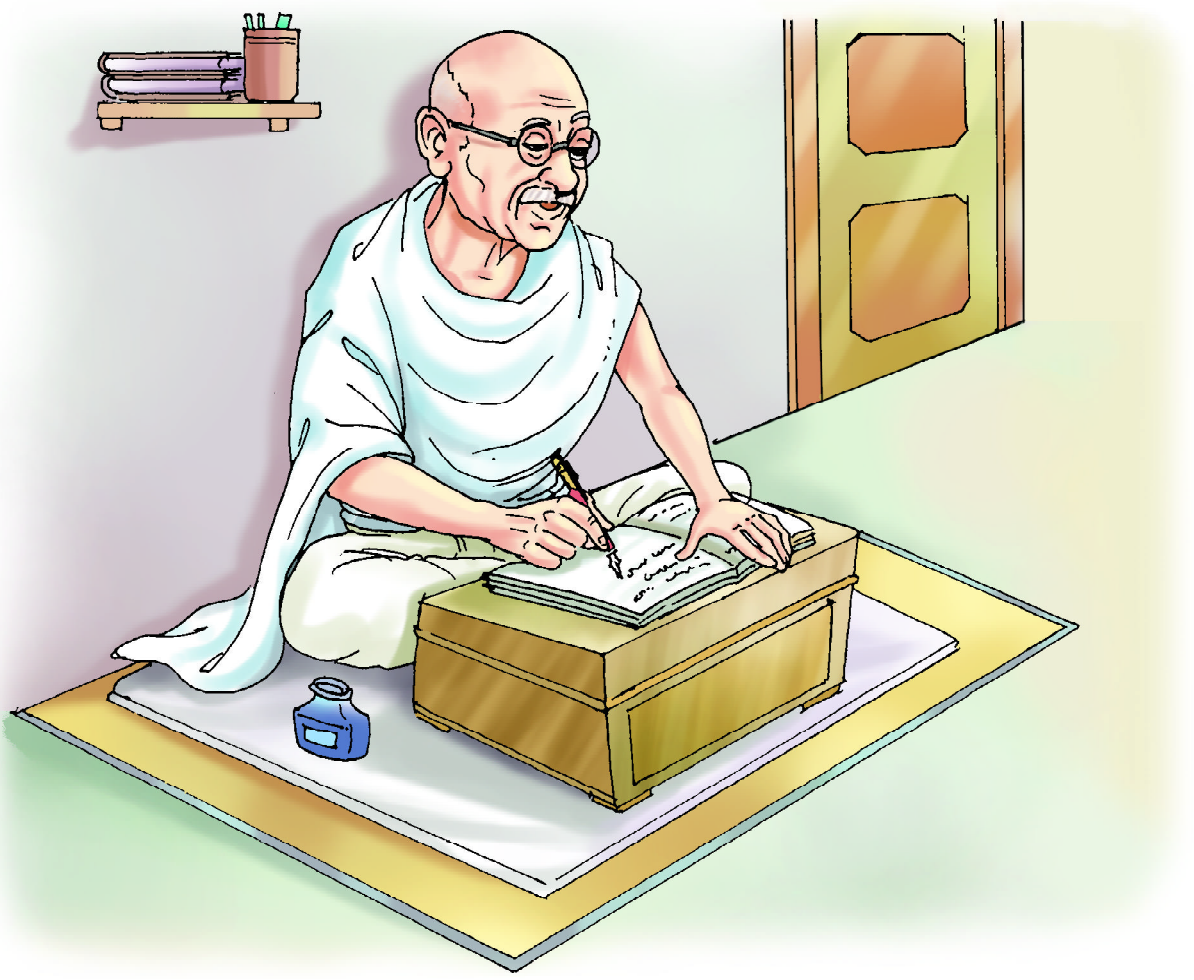

उस दिन गाँधी जी ने वहाँ एक कुर्सी मँगवाई। खुद एक छोटी-सी तिपाई ले आए और उस पर उन्होंने एक मिट्टी का **सकोरा** रख दिया। यह देखकर और लोग **अचरज** से देखने लगे। एक ने हिम्मत करके पूछा, ''बापू जी, आप यह सब क्या कर रहे हैं?''

शब्दार्थ–सकोरा–मिट्टी का कटोरीनुमा बर्तन, **अचरज**–हैरानी

गाँधी जी ने कहा, ''मौलाना अबुल कलाम आज़ाद आने वाले हैं न? उन्हें ज़मीन पर बैठने की आदत नहीं है। उनके लिए यह इंतज़ाम कर रहा हूँ।''

''और यह मिट्टी का सकोरा क्यों?''

''यह एक राखदानी है।''

गाँधी जी अपने यहाँ आने वाले अतिथियों की सुविधा का कितना ध्यान रखते थे, यह इससे स्पष्ट होता है। वे अपनी जीवन-पद्धति से दूर अन्य ढंग की जीवन-पद्धति जीने वाले की अड़चन समझते थे। वे नहीं चाहते थे कि उन्हीं के विचार और आचार दूसरों पर ज़बरदस्ती लादे जाएँ। कोई अहिंसक ढंग से उन्हें अपनाता, तो वे इसका स्वागत करते थे।

गाँधी जी छोटी-से-छोटी चीज़ का ध्यान रखते थे। मनोहर दीवान से उन्होंने कहा, ''पूनियाँ लपेटने का जो डोरा था, वह कहाँ गया?'' उन्होंने दूसरा डोरा ला दिया पर वे बोले, ''नहीं, यह नहीं चलेगा। मुझसे डोरा गुम हो जाए, यह कैसे चलेगा?''

मनोहर दीवान ने पूछा, ''बापूजी, इस छोटे-से डोरे में क्या रखा है?''

बापू बोले, ''अगर मेरे हाथ से डोरा गुमने लगे तो स्वराज्य भी गुम होने में देर नहीं लगेगी।''

बापूजी, जो चिट्ठियाँ आती थीं, उनके लिफ़ाफ़े, तार के काग़ज़, चिट्ठियों के एक तरफ़ से कोरे काग़ज़ या बचे हुए काग़ज़ को भी सँभालकर, काटकर रखते थे। वे सोचते थे कि काग़ज़ का **अपव्यय** हमें नहीं करना चाहिए।

गाँधी जी यह भी चाहते थे कि सब चीज़ें जो काम में लाई जाएँ, वे स्वदेशी हों। एक बार उन्होंने आश्रम में कृष्णचंद्र से कहा कि बढ़ई के सब औज़ार ले आओ। वे बाज़ार से खरीदकर ले आए। गाँधी जी ने कहा, ''ये तो विदेश के बने हुए हैं। ये सब तभी मैं काम में लाऊँगा; जब वे स्वदेश में बने हुए हों।'' इसी कारण सिला हुआ कपड़ा पहनना उन्होंने छोड़ दिया था, चूँकि तब 'सुई' भी हिंदुस्तान में नहीं बनती थी, न सिलाई की मशीन, न कैंची। उन्होंने पुराने ढंग की धोती और चादर, बिना सिला हुआ कपड़ा पहनना ही जीवन के अंतिम कई दशकों में अपना पहनावा बना लिया था।

एक दिन एक नौजवान सेवाग्राम में आया। वह गाँधी जी के साथ आश्रम में उनकी सहायता करना चाहता था और सलाह लेना चाहता था। वह बोला, ''मैं आदमियों की सेवा करना चाहता हूँ पर ईश्वर में मेरा विश्वास नहीं है।''

गाँधी जी ने जवाब दिया, ''मनुष्य से प्रेम और सेवा बहुत अच्छी बातें हैं। पर मनुष्य ईश्वर का स्थान नहीं ले सकता। ईश्वर के बारे में अलग-अलग समूहों में लोग अलग-अलग तरह की कल्पनाएँ करते हैं और उनमें अधूरापन आ जाता है। असल में, आप ईश्वर का नाम लेते हैं पर अपने जीवन में उसकी सजीव प्रतिकृति मनुष्य के साथ सही व्यवहार नहीं करते। हर मनुष्य में ईश्वर है, यह मानना ही ईश्वर पर सच्चा विश्वास रखना है।

शब्दार्थ–अपव्यय–फिजूलखर्च

प्रेम या अहिंसा में ही भगवान है।''

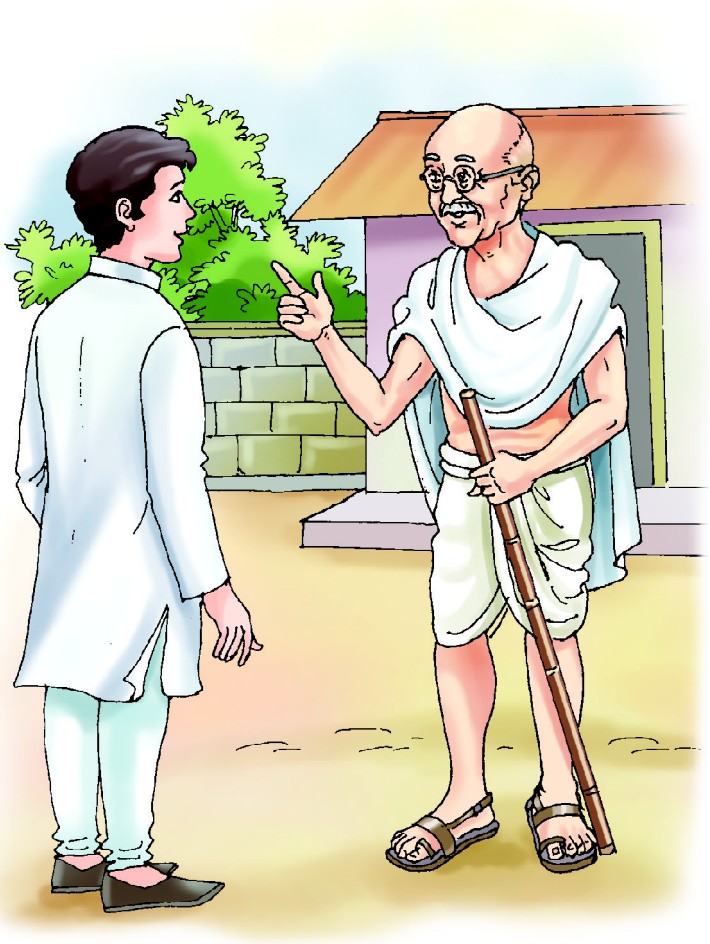

उन्होंने युवक से कहा कि जब तक यह पूरा विश्वास पैदा न हो, वह आश्रम में रहे।

एक दिन आश्रम के उस समय के मंत्री छगनलाल जोशी ने कहा कि आश्रम में कोठार के काम में, हिसाब में कुछ गड़बड़ी हो गई है। उस दिन शाम की प्रार्थना में उन्होंने कहा, ''छगनलाल भाई ने इस सत्य को छिपाकर रखा, यह बहुत बुरी बात हुई है। हम इस आश्रम को 'सत्याग्रह आश्रम' कैसे कहें?'' छगनलाल जोशी गाँधी जी के ही भतीजे थे। गाँधी जी आत्मशुद्धि के लिए **उपवास** की बात करने लगे। किसी ने यह बताया कि कस्तूरबा को किसी ने चार रुपए उपहार में दिए थे। वह आश्रम के दफ़्तर में जमा नहीं किए गए। गाँधी जी को इस बात का भी बहुत बुरा लगा। वे रात के तीन बजे तक आत्मशुद्धि पर लेख लिखते रहे। उसमें उन्होंने बड़ी सख्ती के साथ छगनलाल और कस्तूरबा की आलोचना की।

हैदराबाद में सरोजिनी नायडू ने यह लेख पढ़ा और उन्हें बहुत बुरा लगा कि गाँधी जी ने अपनी पत्नी का इस तरह सबके सामने, अपने लेख में, अपमान किया। आश्रम में आकर उन्होंने गाँधी जी से अपना गुस्सा व्यक्त किया।

गाँधी जी ने कहा, ''सरोजिनी देवी, यह नाराज़ होने की बात नहीं है। मैं इसे बड़ी खुशी का दिन मानता हूँ। भगवान ने मुझे एक बड़े पाप से बचा लिया। आज मैं अपने नज़दीकी रिश्तेदारों के दोष नहीं बताता, तो कल सारे आश्रम में यह बात फैल जाती और धीरे-धीरे भ्रष्टाचार हमारे सारे जीवन को खा जाता।''

गाँधी जी छोटी-से-छोटी भूल के सार्वजनिक प्रायश्चित में विश्वास करते थे। इसमें वे पत्नी, पुत्र, मित्र, किसी को क्षमा नहीं करते थे।

साबरमती आश्रम में गाँधी जी ने यह नियम बनाया था कि आश्रम में पैदा होने वाली साग-भाजी ही काम में लाई जाए, बाहर से कोई साग-भाजी न मँगाई जाए।

उस समय आश्रम के खेत में कद्दू खूब होते थे। इसलिए रोज़ उसी की सब्ज़ी बनती थी। इस सब्ज़ी को

शब्दार्थ–उपवास–व्रत

भी बड़े-बड़े टुकड़ों में काटकर और उबालकर रख दिया जाता था। उसमें नमक नहीं डाला जाता था। जिसे ज़रूरत होती, वह ऊपर से नमक ले सकता था। आश्रमवासी भाई-बहनों की गाँधी जी से शिकायत करने की हिम्मत न होती।

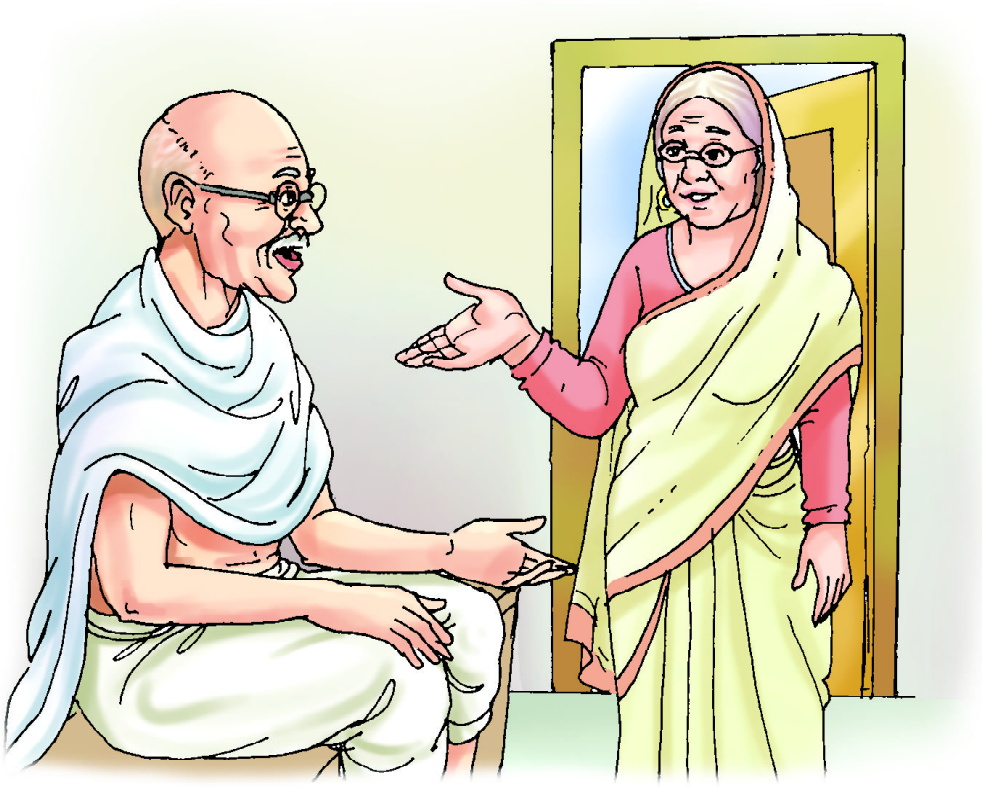

श्री नरहरि भाई पारीख की पत्नी ने कद्दू की सब्ज़ी पर एक गीत ही लिख डाला। बा ने यह गीत सुना तो गाँधी जी के पास शिकायत लेकर पहुँची और उन्हें गीत की बात सुनाती हुई बोलीं, ''आपकी कद्दू की सब्ज़ी भी अच्छी मुसीबत है। एक बहन को बादी हो गई है, दूसरी के सिर में चक्कर आते हैं और तीसरी को डकारों के मारे चैन नहीं है। कद्दू का साग क्या कभी सिर्फ़ उबालकर बनाया जाता है? उसमें मैथी का बघार लगाना चाहिए, गरम मसाला चाहिए, तब तो ठीक रहता है, वरना तो नुकसान करेगा ही।''

अगले दिन प्रार्थना के बाद गाँधी जी ने कहा, ''हमारे आश्रम में एक नए कवि पैदा हुए हैं, अब हमें उनकी कविता सुननी चाहिए।'' इसके बाद गाँधी जी ने नरहरि भाई की पत्नी मणि बहन से कद्दू के संबंध में लिखा वह गीत गवाकर सुना।

गीत पूरा होने पर गाँधी जी ने हँसते हुए कहा, ''अच्छा, तुम लोगों की शिकायत मंज़ूर। जिन्हें बघार लगाकर और मसाला डालकर यह सब्ज़ी खानी हो, वे मुझे अपने नाम लिखा दें।'' गाँधी जी सोचते थे कि बहनें संकोच के मारे अपना नाम नहीं लिखाएँगी। तभी बा बीच में ही बोल उठीं, ''इस तरह कोई बहन अपना नाम आपको नहीं देगी। हम सब बहनें मिलकर खुद ही नाम तय कर लेंगी।''

गाँधी जी बोले, ''तो ठीक ऐसा ही करो, लेकिन देखना इसमें बच्चों को शामिल मत करना। बच्चे बिना मसाले की सब्ज़ी पसंद करते हैं।'' बा के पास इसका उत्तर तैयार था–''इस तरह बच्चों को बहका-बहकाकर आप अपने पक्ष में कर लेते हैं।''

इसके बाद बहनों ने अपने नाम लिखा दिए और गाँधी जी से मसाला खाने की इजाज़त पा ली। मगर गाँधी जी

किसी को आराम से मसाला खाने देने वाले थोड़े ही थे। बहनें गाँधी जी के सामने वाली पंक्ति में ही खाने बैठती थीं तो गाँधी जी उनको ताना मारते हुए कहते थे–''क्यों बघार कैसा लगा है? सब्ज़ी चटपटी बनी है न?''

बा भी कम नहीं थीं। वे गाँधी जी से कहतीं–''अब रहने भी दीजिए। आप क्या कुछ कम थे? हर रविवार को मुझसे **पूरन पोली** और पकौड़ियाँ बनवाकर पहले चटकर जाने वाले आप ही थे या कोई और?''

गाँधी जी कहते–''तू तो मेरी सारी पोल खोल देगी।''

इस तरह से गाँधी जी आश्रम में आने वाले हर छोटे-बड़े व्यक्ति का खुद ख़्याल रखते। कस्तूरबा और दूसरे आश्रम के भाई-बहनों को स्वयं सेवाओं से उदाहरण देते जाते। वे खुद करते, फिर कहते। गाँधी जी केवल उपदेशक नहीं थे, कर्मयोगी थे।

–डॉ. प्रभाकर माचवे

शब्दार्थ–पूरन पोली–महाराष्ट्र का एक प्रकार का स्वादिष्ट मीठा व्यंजन

अभ्यास

पाठ में से

1. गाँधी जी ने सिला हुआ कपड़ा पहनना क्यों छोड़ दिया?
2. गाँधी जी ने नौजवान को क्या समझाया?
3. गाँधी जी काग़ज़ का अपव्यय किस प्रकार रोकते थे?
4. आत्मशुद्धि के लिए लेख लिखने का क्या कारण था?
5. **रिक्त स्थान भरिए–**

   (क) गाँधी जी की कुटी में ..... की बैठक होने वाली थी।

   (ख) मिट्टी का सकोरा एक ..... था।

   (ग) गाँधी जी से ..... खो गया था।

   (घ) कस्तूरबा को ..... रुपए उपहार में मिले थे।
6. **उचित उत्तर पर सही (✔) का निशान लगाइए–**

   (क) कद्दू के विषय पर गीत किसने लिखा था?

   ☐ कस्तूरबा ☐ नरहरि भाई ☐ मणि बहन ☐ छगनलाल जोशी

   (ख) गाँधी जी ने कृष्णचन्द से क्या लाने के लिए कहा?

   ☐ मेज़ ☐ कटोरा ☐ कुर्सी ☐ तिपाई

   (ग) गाँधी जी का लेख पढ़कर किसे बुरा लगा?

   ☐ सरोजिनी नायडू ☐ कृष्णचन्द ☐ कस्तूरबा ☐ नरहरि भाई

   (घ) मौलाना अबुल कलाम आज़ाद को किस पर बैठने की आदत नहीं थी?

   ☐ कुर्सी ☐ ज़मीन ☐ चारपाई ☐ चटाई

बातचीत के लिए

1. 'गाँधी जी केवल उपदेशक नहीं थे, कर्मयोगी थे' चर्चा कीजिए।
2. भ्रष्टाचार हमारे जीवन को किस प्रकार नष्ट करता है? तर्क सम्मत विचार प्रस्तुत कीजिए।
3. 'प्रेम या अहिंसा में ही भगवान है।' इस कथन के पक्ष और विपक्ष में अपने विचार प्रस्तुत कीजिए।

अनुमान और कल्पना

1. यदि गाँधी जी सब्ज़ी में बघार लगाने की अनुमति न देते, तो क्या होता?
2. यदि आपके घर अचानक मेहमान आ जाएँ, तो आप उनकी सुविधा का ध्यान कैसे रखेंगे?
3. कल्पना कीजिए कि आप गाँधी जी के आश्रम में हैं। आप अपना वहाँ का अनुभव बताइए।

भाषा की बात

1. कोष्ठक में दिए गए शब्दों के समानार्थी शब्द लिखिए–

(क) उनके लिए यह ..... कर रहा हूँ। (इंतज़ाम)

(ख) कस्तूरबा को किसी ने चार रुपए ..... में दिए। (उपहार)

(ग) इसमें वे पत्नी, पुत्र, मित्र किसी को ..... नहीं करते थे। (क्षमा)

2. निम्नलिखित वाक्यों में मोटे काले शब्दों के उचित लिंग भेद पर घेरा लगाइए–

(क) गाँधी जी एक **कुटी** में रहते थे। (पुल्लिंग/स्त्रीलिंग)

(ख) उन्होंने एक मिट्टी का **सकोरा** रख दिया। (पुल्लिंग/स्त्रीलिंग)

(ग) वह पुराने ढंग की धोती और **चादर** पहनते थे। (पुल्लिंग/स्त्रीलिंग)

(घ) गाँधी जी के **आश्रम** का नाम सेवाग्राम था। (पुल्लिंग/स्त्रीलिंग)

3. नीचे दिए गए वाक्यांशों के लिए एक शब्द लिखिए–

(क) जिसे बहुत थोड़ा ज्ञान हो .....

(ख) किसी के पीछे चलने वाला .....

(ग) जो कहा जा सके .....

(घ) जिसका कोई आकार हो .....

(ङ) ईश्वर में विश्वास रखने वाला .....

(च) जो किए गए उपकार को मानता हो .....

जीवन मूल्य

- गाँधी जी का जीवन 'सादा जीवन उच्च विचार' का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण रहा है।

1. आप अपने जीवन में सादगी को किस प्रकार अपनाते हैं?
2. सादा जीवन सुदृढ़ चरित्र को आधार प्रदान करता है। कैसे?

कुछ करने के लिए

1. गाँधी जी हर छोटी-से-छोटी चीज़ का ध्यान रखते थे। आप अपनी छोटी तथा महत्त्वपूर्ण वस्तुओं को कैसे सँभालते हैं? चर्चा कीजिए।
2. श्रीमती पारीख ने उबले कद्दू पर कविता बनाई और सुनाई। आपको भी जो सब्ज़ी पसंद नहीं हो, उस पर कविता बनाइए और कक्षा में सुनाइए।
3. गाँधी जी पर आधारित चलचित्र 'गाँधी' तथा 'लगे रहो मुन्ना भाई' देखिए।